अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





वेष–भूषा पहनावा
Attire

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

वेष–भूषा पहनावा Attire

अध्याय शीर्षक	वेष–भूषा पहनावा
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Attire**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

वेष–भूषा पहनावा Attire

वेष–भूषा पहनावा Attire

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – बान्दा क्षेत्र के **वेशभूषा** का सन्क्षिप्त वर्णन

वेष–भूषा पहनावा Attire

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

वेश–भूषा

वेश–भूषा के सम्बन्ध में बान्दा व बुन्देलखण्ड में आम व्यक्ति की सह धारणा रहती है–

खाबे को मउआ, पेरबे को अमौंआ।

बुन्देली अमौना वस्त्र आम के पत्रों से बने रन्ग में रन्गा होता है। किसी समय अमौना बहुत प्रचलित रहा होगा और उसमें लोक की रूचि वस्त्र चयन में रही होगी। एक बुन्देली युवित चरितार्थ है–

कपड़ा पैरे जग भाता, खाना खैये मन भाता।

लोक में कपड़ों को पहनने के सम्बन्ध में कुछ नियंत्रण एवं वर्जनाएँ भी लागू है। इस सम्बन्ध में लोकमान्यता है–

बुध–बृहस्पति–शुक्रवार, कपड़ा पहने तीन बार

अर्थात नया वस्त्र पहनने के लिए तीन दिन शुभ होते है। नवीन वस्त्र धारण करते समय उन्हें भगवान, कन्या, तुलसी एवम् पृथ्वी से स्पर्श कराते है।

बान्दा व बुन्देलखण्ड का पहनावा /वस्त्र

बान्दा व बुन्देलखण्ड का पहनावा सादा है। बान्दा व बुन्देलखण्ड मे वस्त्रों का अपना परम्परागत रुप है।

वस्त्र/वसन से क्षेत्र के लोग आसानी से पहचाने जा सकते हैं। सामान्यतया ग्रमीण अन्चल के लोग धोती पर्दनी अथवा पंचा/पान्चा पहनते हैं, कमर के ऊपर बन्डी या कुर्ता पहनते हैं, मून्छें रखते हैं, सिर पर साफा बान्धते है। पैरों में जबधब्बेदार जूता अथवा पनहियां पहनते हैं। औरतें कान्छदार धोती पहनती है, पैरों में झान्झे लच्छा और कड़ा पहनती है। कमर में करधनी, हाथों में कड़ा और बहुंटा, गले में सुतिया और हार, कानों में कर्णफूल, नाक में नथ या मुन्दरी अथवा सिर पर बेन्दी पहनती है। यही बान्दा और उसके आसपास के लोगों पहचान है।

बुन्देली पुरुषों के पारम्परिक परिधानो में पुरूष शरीर पर कुर्ता धोती, सिर पर साफा, टोपी(खादी की)/ टोपी, अगौछी, पगड़ी, फतूमी, सलूका, लंगोटा, जाँघिया पंछा, मिरजई, अंगरखा तथा पाँवों में सराई, पनैया, पहनते हैं।

पुरूषों के सिर पर पहनने वाले वस्त्रो मे साफा, पगड़ी, अँगौछी, टोपी और शरीर पर कुर्ता, धोती, मिर्जई(अंगरखा), बन्डी, फतुई, कमीज, जाडे मे रूई भरी बन्डी, परदनी(पुरूष की धोती), तहमद आदि प्रयोग करते हैं। कंधे पर पिछौरिया, तौलिया या साफी डालते हैं। पैरों मे चमरौधा जूते या पनइयाँ/पनहियां पहनी जाती हैं।

स्त्रियों के लोक परिधान पहनने का तरीका कुछ ऐसा होता है, कि जिससे उनके अधिकान्श आभूषण दिखाई देते रहे। कुंवारी लड़कियाँ कदेला डालती है। विवाहितायें आन्चल डालती है। यहाँ पर महिलाओं द्वारा विशेष रूप से बांड की जरी से इस पर कढ़ाई मिलती है। यह विशेष प्रकार का घाघरा होता है। बान्दा व बुन्देलखण्ड के कुर्म समुदायों मे आज भी स्त्रियां बांड पहन कर खेतों पर कृषि कार्य हेतु जाती है।

स्त्रियां लहन्गा, पोलका, धोती, घंघरियां, ब्लाउज, चुनरिया, पिछोरा, ओढ़नी, चोली तथा पाँव में पनैया, खनाऊपनैया आदि पहनती हैं। महिलायें लोक–जीवन मे परिश्रम के कार्य करते समय कान्छ की धोती पहनती है। आम जीवन मे वे धोती, पोलका(कमर तक का ब्लाउज), चोली, घाघरा, चोली, चुनरिया आदि प्रयोग करतीं हैं। पैरो मे फिचऊ पन्हइयाँ पहनने का चलन है। आधुनिकता ने इस पहनावे पर भी प्रभाव डाला है। अब दूर–दराज के गाँवों मे अल्प–सन्ख्या मे यह वस्त्र धारण किए स्त्री–पुरूष दिखाई देते हैं।

वेष–भूषा पहनावा Attire

निम्न वर्ग की मेहनतकश स्त्रियां कान्छ लगाकर धोती पहनती हैं। ज्यादातर परिवारों में रन्गरेज से रन्गवाई गई धाती पहनने का रिवाज है। रन्गाई प्रायः गाढ़े रन्ग से होती है। कपड़ों पर कढ़ाई द्वारा बेलें बनाने का प्रचलन भी देखने को मिलता है।

कढ़ाई द्वारा तथा धागे से बेलें बना कर लगाने का प्रचलन कहीं–कहीं देखने को मिलता है। वस्त्रों के रन्ग तथा छापे पारम्परिक होते हैं। चटख रन्गो का प्रयोग होता है। किनारीदार धोती पर फूल की बेलें बहुत प्रचलन मे हैं। ब्लाउज भी अधिकतर छापे वाले पहने जाते हैं, वे भी चटख रन्गों के फूलदार होते हैं। पुरूषों के कपड़ों पर चित्रकारी बहुत कम देखने को मिलती है। विशेष अवसरों पर या नृत्य की वेशभूषा में फूलदार वस्त्रों का यदा–कदा पुरूष प्रयोग करते हैं।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार

बुन्देलखण्ड विनीता 30

बुन्देलखण्ड की लोक–चित्रकला डा0 श्रीमती मधु श्रीवास्तव 1–197

2015ण्269019णहिन्दी के उपन्यासों में बुन्देलखण्ड

वेष–भूषा पहनावा Attire